Patrika (Indore), 26th August 2026, Page – 06

रिसर्च : ग्रामीण क्षेत्रों में बनेगा 'वेस्ट टू वेल्थ' मॉडल

कचरे से अब गांव भी कमाएंगे

IIPS व IIT इंदौर की रुरल एरिया में इंटीग्रेटेड वेस्ट मैनेजमेंट रिसर्च

70%
से ज्यादा कचरे के रिसाइक्लिंग की संभावनाओं की होगी तलाश

एक्सक्लूसिव

पत्रिका
प्रीति कौशल
patrika.com

इंदौर. शहर की तर्ज पर अब इंदौर जिले के गांवों में भी कचरे को समस्या के बजाय आय और रोजगार के संसाधन में बदलने की तैयारी है। इसके लिए देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज (आइआइपीएस) और आइआइटी इंदौर ने संयुक्त रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के वेस्ट मैनेजमेंट पर रिसर्च शुरू की है। गुलावट, बनेरिया, बेरछा, बजरंगपुरा और नयापुरा सहित कुछ गांवों में सर्वे के बाद अब वहां निकलने वाले कचरे की मात्रा, प्रकृति और रिसाइक्लिंग की संभावनाओं का अध्ययन किया जाएगा। लक्ष्य 70 प्रतिशत से अधिक उपयोगी कचरे को रिसाइकिल कर उससे उत्पाद तैयार करने और ग्रामीणों के लिए रोजगार के अवसर विकसित करने का है।

इस पहल में कचरे के संग्रहण से लेकर उसकी छंटाई, प्रोसेसिंग और उत्पाद निर्माण तक की पूरी व्यवस्था को स्थानीय स्तर पर विकसित करने की संभावनाएं देखी जा रही हैं। इससे गांवों से कचरा बाहर ले जाने की जरूरत कम होगी और कचरे से बनने वाले उत्पादों की पूरी वैल्यू चेन गांव में ही तैयार की जा सकेगी।



कचरे से बनेगा सर्कुलर इकोनॉमी मॉडल

रिसर्च का फोकस केवल कचरा कम करने तक सीमित नहीं है। कागज, प्लास्टिक, कपड़ा, जैविक अवशेष और दूसरी रिसाइक्लेबल सामग्री को अलग-अलग श्रेणियों में बांटकर उनके दोबारा उपयोग की संभावनाएं तलाश की जाएंगी। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में सर्कुलर इकोनॉमी को बढ़ावा देने के साथ प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव भी कम किया जा सकेगा। घरों, दुकानों और ग्रामीण गतिविधियों से निकलने वाले कचरे को स्रोत स्तर पर अलग करने पर विशेष जोर रहेगा। गीले कचरे का स्थानीय उपयोग और सूखे कचरे की छंटाई की जाएगी।

पहले जागरुकता, फिर छंटाई

मॉडल की सफलता के लिए ग्रामीणों की भागीदारी को सबसे अहम माना जा रहा है। घर के स्तर पर गीले और सूखे कचरे को अलग करने, रिसाइक्लेबल सामग्री को सुरक्षित रखने और जैविक कचरे के स्थानीय उपयोग के लिए जागरुकता अभियान चलाने की जरूरत होगी। रिसर्च के दौरान व्यवहारगत बदलाव व स्थानीय मॉडल की व्यवहारिकता पर भी ध्यान दिया जाएगा।

गांव में ही तैयार हो सकते हैं उत्पाद

रिसर्च में देखा जाएगा कि स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कचरे से किन उत्पादों का निर्माण व्यावहारिक और आर्थिक रूप से उपयोगी हो सकता है। कागज, कपड़े और प्लास्टिक से थैले, पैकेजिंग सामग्री, क्राफ्ट आइटम और घरेलू उपयोग की वस्तुएं बनाने की संभावनाएं तलाश की जा रही हैं। जैविक कचरे के उपयोग के विकल्प भी अध्ययन का हिस्सा होंगे। रिसर्च के दौरान नए उपकरणों व तकनीकों का प्रयोग करेंगे। गांव में ही संग्रहण, छंटाई और प्रोसेसिंग की व्यवस्था बनने से लोगों के लिए रोजगार की चेन विकसित हो सकती है।

गांवों से शुरुआत
गुलावट, बनेरिया, बेरछा, बजरंगपुरा और नयापुरा सहित कुछ गांवों में सर्वे हो चुका है।

रिसाइक्लिंग का लक्ष्य
ग्रामीण क्षेत्रों में निकलने वाले उपयोगी कचरे के 70 प्रतिशत से अधिक हिस्से को रिसाइकिल करने की संभावनाएं तलाश की जाएंगी।

कचरे से उत्पाद
कागज, प्लास्टिक, कपड़ा और जैविक अवशेष से उपयोगी व बाजार योग्य उत्पाद तैयार करने के विकल्पों का अध्ययन होगा।

गांव में ही प्रोसेसिंग
संग्रहण, छंटाई और प्रोसेसिंग स्थानीय स्तर पर होने से परिवहन लागत घटाने और रोजगार बढ़ाने की संभावना है।

सर्कुलर इकोनॉमी पर जोर
कचरे को फेंकने के बजाय संसाधन के रूप में दोबारा इस्तेमाल कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था से जोड़ने का मॉडल विकसित किया जाएगा।

रिसर्च में तीन वरिष्ठ शामिल



ग्रामीण क्षेत्रों में वेस्ट मैनेजमेंट को प्रभावी बनाने के लिए लोगों को कचरे के सही प्रबंधन के प्रति जागरूक करना जरूरी है। घर के स्तर पर गीले-सूखे कचरे को अलग करने की आदत विकसित होने से रिसाइक्लिंग की प्रक्रिया आसान होगी। उपयोगी सामग्री अलग रखने व जैविक कचरे का उपयोग करने ग्रामीणों की भागीदारी बढ़ाने पर जोर देंगे। - **प्रो. गीता नेमा,** मैनेजमेंट विभाग, आइआइपीएस डीएवीवी



रिसर्च में कचरे से उपयोगी और बाजार की जरूरत के अनुरूप उत्पाद तैयार करने की संभावनाओं का अध्ययन किया जा रहा है। कागज, प्लास्टिक, कपड़ा और अन्य रिसाइक्लेबल सामग्री से थैले, पैकेजिंग सामग्री, क्राफ्ट आइटम व घरेलू उपयोग की वस्तुएं बनाई जा सकती हैं। उत्पादों की आर्थिक संभावनाएं भी देखी जाएंगी। -**डॉ. मनविंदर सिंह सलूजा,** प्रोफेसर, मैनेजमेंट विभाग, आइआइपीएस



इस मॉडल की कोशिश कचरे की प्रोसेसिंग को गांव के स्तर पर ही विकसित करने की है। रिसर्च में कुछ नए उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग किया जाएगा। यदि संग्रहण, छंटाई, प्रोसेसिंग और उत्पाद निर्माण की व्यवस्था स्थानीय स्तर पर तैयार होती है तो कचरे के परिवहन की जरूरत घटेगी और गांव में ही रोजगार की पूरी वैल्यू चेन विकसित की जा सकेगी। -**डॉ. आसुतोष मंडपे,** सिविल ब्रांच, आइआइटी इंदौर